।। ज्ञानम्, बलम्, शीलम्, लालित्यादिनाम् संवर्धनम ।।

पंचक्रोशी शिक्षण मंडल संचलित,

सहकार महर्षि शंकरराव मोहिते-पाटील महाविद्यालय, रहिमतपुर

तह. कोरेगांव, जि. सातारा (महाराष्ट्र)

हिंदी विभाग एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली तथा

महाराष्ट्र हिंदी परिषद, कोल्हापुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित,

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दि. ८, ९ जनवरी, २०१६

भारतीय दलित साहित्य

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रा./डॉ. श्री./श्रीमती खोत सिदराम कृष्णा ने 'भारतीय दलित साहित्य ' इर विषय पर आयोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्ष / बीजभाषक / अतिथि / विषय प्रवर्तक / सत्राध्यक्ष / आलेख वाचक / सूत्रसंचालक / प्रतिभागी के रुप में उपस्थित रहकर संगोष्ठी को सफल बनाने में मौलिक योगदान दिया है तथा इस विषय पर आलेख प्रस्तुत किया । इसलिए यह प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है ।

Mohite			
संयोजक	प्रमुख अतिथि	प्रधानाचार्य	संस्थाध्यक्ष

संगोष्ठी स्मरणिका

भारतीय दलित साहित्य

आयोजक

पंचक्रोशी शिक्षण मंडल संचलित,

सहकार महर्षि शंकरराव मोहिते पाटील महाविद्यालय, रहिमतपुर

हिंदी विभाग

एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के संयुक्त

तत्वावधान में आयोजित, राष्ट्रीय संगोष्ठी

दि. ८ तथा ९ जनवरी, २०१६

स्वागताध्यक्ष

मा. सौ. चित्रलेखा माने कदम

अध्यक्ष, पंचक्रोशी शिक्षण मंडल, रहिमतपुर

संपादक

प्रा. सुनंदा मोहिते

सहसंपादक

प्रा. गोरख बनसोडे

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
Mobi. 09850203295, 07588057695

49

13) तेलंगाना के दलित आन्दोलन में अंबेडकरवादी—विचारधारा
डॉ. इंदिरा ॥ ८३
14) 'ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी साहित्य में चित्रित दलित चेतना''
प्रा. सुनंदा सोपानराव मोहिते ॥ ८९
15) निराला की कविता में दलित—चेतना
बी.हेमलता ॥ ९३
16) 'कफन' कहानी में दलित चित्रण
डॉ. छाया, डॉ. मायादेवी ॥ ९६
17) हिंदी दलित कवियों की वैज्ञानिक दृष्टि
प्रा.गोरख निळोबा बनसोडे ॥ ९९
18) 'दोहरा अभिशाप'और 'जिण अमुचं' में चित्रित स्त्री संवेदना
कल्याणी लिंगुराम डाकोरे ॥ १०३
19) हिंदी की दलित स्त्री आत्मकथाएँ : संवेदना की अभिव्यक्ति
दत्ता सर्जेराव मुदनर ॥ १०६
20) दलित आत्मकथाओं में सामाजिक संघर्ष
डॉ. स्नेहलता नेगी ॥ १०८
21) 'भारतीय दलित आत्मकथा : एक अभ्यास'
प्रा. डॉ. जशु पटेल ॥ १११
22) डॉ. दामोदर खडसे की अनूदित दलित आत्मकथा
प्रा. एम. जे. शिवदास ॥ ११६
23) ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित चेतना
शिंगाडे सचिन सदाशिव ॥ १२०
24) सुशीला टाकभौरे के काव्य में दलित नारी चेतना
तुपसाखरे शामराव पुंडलिक ॥ १२४
25) भारतीय दलित साहित्य में नाटक
प्रा. डॉ भानुदास आगेडकर ॥ १२७
26) दलित जीवन का यथार्थ: नंगा सत्य
कैलास अभिमन्यु आखाडे ॥ १३१

27) हिंदी उपन्यास में चित्रित भारतीय दलित नारी की त्रासदी
प्रा. रमेश आण्णाप्पा आंदोजी ॥ १३४
28) जीन—काठी कहानी में दलित विमर्श
बी. एस्. भालदारे ॥ १३७
29) 'छूआछूत' कहानी में चित्रित संवेदना
डॉ. एम.बी. बिराजदार ॥ १४९
30) नागार्जुन के उपन्यास साहित्य में जनचेतना के विविध आयाम
प्रा,डॉ,शिवाजी उत्तम चवरे ॥ १४३
31) हिंदी दलित कहानियों में भाषा प्रयोग
डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी ॥ १४६
32) दलित समाज की कथा—व्यथा : समाज की नाक"
प्रा. शहाजी जाधव ॥ १४९
33) दलित वेश में' और 'दुनिया की शै में' के संदर्भ में
प्रा. डॉ. बळवंत बी. एस ॥ १५३
34) भारतीय दलित साहित्य मेरा सफर मेरी मंजिल'' आत्मकथा के विषेश संदर्भ में
डॉ.भारत श्रीमंत खिलारे ॥ १५६
35) हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन
प्रा. डॉ. एस. के. खोत ॥ १६३
36) हिंदी दलित कविता
डॉ. विनायक कुरणे ॥ १६७
37) हिंदी दलित कविता में जाति विमर्श
डॉ. मीनाक्षी विनायक कुरणे ॥ १७२
38) हिंदी काव्य में दलित चेतना
प्रा. रगडे परसराम रामजी ॥ १७६
३९) भारतीय दलित साहित्य :— एक वैज्ञानिक सोच''
प्रा. बाबासाहेब तुकाराम साबळे ॥ १८२
40) इक्कीसवी सदी की हिंदी दलित कविता — चिंतन''
डॉ. भरत धोंडिराम सगरे ॥ १८८

हमारे सामने आई है उनमें डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के रंग में सर्वाधिक रुप में रंगी हुई अगर कोई आत्मकथा है तो 'मेरा सफर मेरी मंजिल' एक वाक्य में अगर कहना हो तो यह सफर एक ऐसे व्यक्ति का है जिसने डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को न सिर्फ अपना आदर्श माना है, बल्कि जीवन भर उनके बताये सिद्धांतों को अपनाया है।

आत्मकथाकार दलित समाज को एक छत्र के नीचे देखना चाहते हैं और खास करके दलित समाज में भी सर्वाधिक तिरस्त तबका वाल्मीकि समाज को लेखक दलितों के बराबर का हिस्सेदार बनाने के आग्रही हैं।

संदर्भ संकेत :—

१) डॉ. जाटव डी. आर : मेरा सफर मेरी मंजिल, समता साहित्य सदन, जयपुर। सं. २००० प्रारंभिक
२) — वहीं — पृ. ०१
३) — वहीं — पृ. ०६
४) — वहीं — पृ. १२
५) — वहीं — पृ. १४
६) — वहीं — पृ. १४
७) परमार अभय : हिंदी दलित आत्मकथाएँ ज्ञान प्रकाषन, कानपुर। प्र. सं. २०११, पृ. ९९
८) डॉ. जाटव डी. आर : मेरा सफर मेरी मंजिल, समता साहित्य सदन, जयपुर। सं. २०००, पृ. १९—२०
९) — वहीं — पृ. २१
१०) — वहीं — पृ. २८

35 हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन

प्रा. डॉ. एस. के. खोत
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, चंद्रबाई — शांताप्पा शेंडुरे
कॉलेज, हुपरी, तहसिल — हातकणंगले, जि. कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

उपन्यास वर्तमान युग की विधा है। आधुनिक युग में गद्य की विविध विधाओं का विकास हुआ है। निस्संदेह रूप से कहा जा सकता है कि सभी गद्य विधाओं मे उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय आकर्षक एवं सजीव विधा है, इसका मूल कारण यह है कि उपन्यास में मनुष्य अपना पूरी समग्रता और पूर्णता के साथ समा सकता है। आज उपन्यास साहित्यिक अभिव्यक्ति का अत्यंत सषक्त माध्यम है। उपन्यास में मानवजीवन के विविध पक्षों के साथ साथ स्त्री—पुरूष के सम्बन्धों, विचारों, भावनाओं, अन्तर्वेगों, संघर्ष, आशा—निराशा, सफलता—असफलता और सुख:दुख का विवेचन — विष्लेशण होता है ।

आधुनिक युग में दलित—विमर्ष और दलित जीवन उपन्यास साहित्य में बहुचर्चित विषय रहा है। दलित ने भोगे हुए दु:ख तथा दर्द के साथ साथ संघर्ष को नये सिरे से वाणी देने का प्रधान कार्य दलित साहित्य ने किया है। अफसोस की बात यह है कि दलित समाजसेवक हो या राजनेता हो उनके आन्दोलन का रूख संगठित रूप से भी स्पश्ट नहीं हुआ है। जातिवाद की कठोरता का इतिहास भारत वर्ष में लम्बा चला है। भारत वर्ष में सभी स्थितियों में हर बार बदलाव हुआ है। विभिन्न विचार के लोग सत्ता के कुर्सी पर बैठे, महान विद्वान हुए, महान संत हुए, सामर्थ्यवान लोग रहे बडे बडे साहित्यकार हुए किंतु दुर्भाग्य से क्रान्ति और प्रगती का युग होने के बावजुद भी जातिवाद का पूर्ण रूपेण अंत नहीं हुआ है ।

सांप्रत समय में दलित साहित्यकारों का विषेश महत्त्वपूर्ण स्थान एवं योगदान रहा है । यह सच है कि दलितों की पीडा या वेदना का सही अंकन पहली बार कविता के माध्यम से हुआ है । स्वातन्त्रोत्तर काल में दलित जीवन की अनेक समस्याओं को लेकर सृजन करनेवाले साहित्यकारों में मोहनदास नैमिशराय का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है । 'आज बाजार बन्द है' मोहनदास नैमिशराय द्वारा सन २००४ में लिखित हिंदी का बेजोड दलित उपन्यास हैं । इस उपन्यास में वेष्याओं के जीवन की दारूण स्थितियों और उनकी व्यथा कथा का सिर्फ अंकन

ही नहीं अपितु राजनीति, पुलिसतंत्र, मन्दिरों और मठों आदि में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा कुत्सित शडयंत्रो का पर्दाफाष भी किया है। प्रा. शीला पटेल के शब्दों में, 'इस उपन्यास में (आज बाजार बंद है) लेखक ने जनता के लिए आंसू बहाने में निपुण नेताओं द्वारा लगाये गये खोखले नारों के पीछे की कुत्सित राजनीति पर तीखा प्रहार किया है । इस उपन्यास में हिन्दू धर्म की परम्पराओं, प्रथाओं तथा कुरीतियों के दबाववश तथा कर्मवाद, भाग्यवाद, स्वर्ग—नरक, पूर्वजन्म जैसे धर्म के अप्रत्यक्ष दमन के तहत दलित वर्ग की युवतियों को तथाकथित धर्म के ठेकेदारों एवं सामन्तों साहुकारों के द्वारा देहव्यापार के घृणित व्यवसाय में धकेल दिये जाने की दारूण कथा का चित्रण किया है ।''१

जाने माने साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय लिखित 'मुक्ति पर्व' उपन्यास के वर्ण्यविशय में स्वतंत्रता के अंतिम पडाव और स्वातंत्रयोत्तर के बाद दलितों के जीवन में आया बदलाव अंकित किया है । इस उपन्यास की कथा संघर्शषील दलित परिवार की है जिसका नायक विशमतापूर्ण परिस्थितियों में आत्मविष्वास के साथ जीना सिखाता है दुर्भाग्य से दलित नबाबों, जमीदारों से, सवर्णा के षोशण के षिकार हो रहे थे । शोशण के खिलाफ आवाज भी उठा देते तो उनकी कोई खैर नहीं थी ।आज का दलित परंपरा और षोशण को नकारनेवाला है । नवाबसाहेब बन्सी को गुलामी की याद दिलाते हुए कहते है, 'तुम गुलाम थे, गुलाम हो, गुलाम रहेंगे'२ यह बात बन्सी सुनकर क्रोधित होता है और मालिक नवाब को कहता है, ''जनाबे अली हम न गुलाम थे, न गुलाम है और न गुलाम रहेंगे ।''३ अंत में बन्सी नवाब की हवेली और काम छोड देता है। नवाब ने उन्हें जानवर से भी बदतर माना था। उनकी नजरों में दलित गुलाम था। बन्सी अपने सुनीत बेटे को पढाता है। सुनीत आत्मविश्वास के शिक्षा लेता है और अपनी बस्ती में अध्यापक बन जाता है । इस रचना के बारे में डॉ. भरत सगरे लिखते है, ''मोहनदास नैमिशराम का २००४ में प्रकाशित 'मुक्ति—पव' दलित जीवन की संघर्षगाथा है । चमारो का जीवन नवाबों की मनमानी शिक्षा में जातीयता, सवर्ण अध्यापिका की मानसिकता, शिक्षित दलित आदि पर प्रकाश डाला है । मुक्ति की प्रतिक्षा में दलित समाज संघर्शरत है। डॉ. बाबा साहब के दर्शन का प्रचारक बंसी सुमित की यह कहानी है। आजादी किसी मिली ? आजादी से दलित कितने लाभान्वित हुए? क्या आजाद भारत में दलित मुक्त है ? आदि सवाल उठानेवाली रचना है ।''७ आज भी दलितवर्ग विभिन्न समस्याओं से घिरा है हमें यह मानना पडेगा की वर्तमान दलित साहित्य में आक्रोश, विक्षोभ, संताप और विद्रोह का यथावत चित्रण है यह सच है कि आज का दलित साहित्यकार सामाजिक बदलाव

हेतू लिख रहा है । दलितों को संघर्शशील तथा क्रियाशील बनाने के लिए दलित साहित्य बडे पैमाने पर आज के युग में लिखा जा रहे है ।

हिंदी साहित्य जगत में दलित जीवन के बारे में जो उपन्यास लिखे गये, उनमें अधिकांश मात्रा में समाज जीवन का यथार्थ वर्णित है । मोहनदास नैमिशराय का 'वीरांगना झलकारी बाई' २००३ में प्रकाशित उपन्यास हाशिये जाति की उपेक्षित वीरांगना के चरित्र की कथा है । डॉ. भरत सगरे ने ठिक ही लिखा है, ''कोरी जाति में पैदा होनेवाली झलकारी झॉसी की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व निछावर करती है । जो न रानी थी न पटरानी, न सरदार की बेटी जान हथेली पर रखकर हाथ में बंदूक ली थी । ऐसी वीरांगना लेखक की प्रेरणास्त्रोत है । ऐतिहासिकता के सामाजिका की दृष्टि से यह उपन्यास महत्त्वपूर्ण है ।''५

यह सत्य है कि दलित साहित्य दलित समाज का आवाज है । जहॉ दलितों पर अन्याय होता है, शोषण होता है वहॉ दलित रचनाकार की निगाहें जाती है । 'छप्पर' उपन्यास जय प्रकाश कर्दम ने १९९४ में लिखा जो हिंदी दलित साहित्य का प्रथम उपन्यास है इस उपन्यास में गंगा तट पर बसे मातापुर संतनगर में रहनेवाले दलित — चमारों का जीवन अंकित किया है । हर गॉव के दलित समाज की स्थिति बडे नगरों के परिप्रेक्ष्य के समान ही है। नगर में बहुत से दलित लोग बिना छकी — भुनी सब्जी खाते है । दुःख की बात यह है कि बहुत सी गर्भवती औरतों को फुटपाथ पर ही बच्चे को पैदा करना पडता है । सही अर्थो में आधुनिक यग में 'छप्पर' उपन्यास दलित साहित्य का क्रान्तिधर्मी दस्तावेज ही है। चन्दन जब पढने के लिए नगर में आया तब उसे पता चला कि नगरों में भी सिर्फ थोडे लोग ही सुखी और सम्पन्न है । लोग अभाव तथा उत्पीडन का जीवन जीते है । चंदन एम.ए., पीएच.डी. होकर अपने बस्ती के बच्चों को पढाता है । चंदन की प्रगति ठाकुर को खटकती रहती है । उपन्यास (छप्पर) की सबसे बडी उपलब्धि यह है कि सोए हुए दलित समाज को वैचारिक आधार पर संगठित करके सामन्ती—ब्राह्मणी शोषण उत्पीडन और जातिगत भेदभाव से मुक्ति के लिए संघर्श की प्रेरणा देता है । उनमें सामाजिक — सम्मान की भावना जागृत करके स्वाभिमान से जीने की ललक पैदा करता है । लेखक शिक्षा के महत्त्व को समझाते हुए सांस्कृतिक क्रान्ति पर जोर देता है । सांस्कृतिक क्रान्ति के बिना सामाजिक क्रान्ति अधूरी है और उनके बिना दलित समाज का उत्थान और विकास सम्भव नहीं है । इसीलिए कर्दम जी ने सांस्कृतिक क्रांति पर सर्वाधिक जोर दिया है । उपन्यास आम—आदमी के जीवन से बहुत नजदीक है ।''६

'काला पहाड' भगवानदास मोरवाल का बहुश्रुत उपन्यास है । २००४

में प्रकाशित इस उपन्यास में नगीना के छोरी जाति चमार का जीवन वर्णित है । घर की दीवारों पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर और संत रैदास के तस्वीर लगाकर युवक आपस में झगडते है और फिर एकता की बाते करते है । डॉ. भरत सगरे इस उपन्यास के संदर्भ में लिखते है, 'राजनीतिक दृष्टि से दलित जाग उठा है । किसनकाल जटाव 'रविदास मोहल्ला सुधार समिती' के महासचिव है । वे वोट खरीदना, पैसे बांटने का विरोध करते है । कुम्हार वाडे, चमार बस्ती होने से स्पश्ट होता है यहाँ जातियता रही है। चमारोंके घर चाय न पीनेवाला ज्ञानचंद जैन है जो सवर्णो की मानसिकता का वही प्रमाण है ।''७

यह ध्यान देने योग्य बात है कि हिंदी साहित्य जगत में उपन्यासों को योगदान सराहनीय है । हमें यह मानना पडेगा कि दलित जीवन अंकन वर्तमान में चिंतन तथा विमर्ष का विषय बना है । दलित साहित्य की मुख्य विषेशत: भोगा हुआ यथार्थ है । दलित के बदलते जीवन की सही तस्वीर हिंदी दलित उपन्यास में देखने को मिलती है ।

संदर्भ—संकेत

१. २१ वीं शती के प्रथम दशक के उपन्यास, संपा. प्रा. सतीश पटेल, प्रा. शिला पटेल, पृ. ७३

२. मुक्तिपर्व, मोहनदास नैमिशराय, पृ. २८

३. वही, पृ. २८

४. इक्कीसवीं सदी का दलित साहित्य, डॉ. भरत सगरे, पृ. १०४

५. वहीं, पृ. ०४

६. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास, संपा. डॉ. एम. बी. पटेल, डॉ. दिलीप मेहरा, पृ. ११८

७. दलित साहित्य शोध एवं दिशा, डॉ. भरत सगरे, पृ. ५५

36 हिंदी दलित कविता

डॉ. विनायक कुरणे

हिंदी दलित साहित्य में दलितों के जीवन का यथार्थता से चित्रण हुआ है। आत्मकथा, उपन्यास, कहानी, कविता आदि के माध्यम से दलितों की पीड़ा आक्रोश, विद्रोह, समस्याओं का अंकन केवल दलित वर्ग से पैदा हुए साहित्यकारों ने किया है। इस संदर्भ में भगवान सिंह लिखते है, '' दलित चेतना की अभिव्यक्ति केवल दलित वर्ग से पैदा हुई अस्पृष्यता के मुक्त भोगी लेखक ही कर सकते है।''१ उपन्यास, कहानी जैसी विधाओं में व्यापक विचार रहते हैं लेकिन कविताओं में बड़े विचार को कुछेक पंक्तियों में सिमटा जाता है। दलित कविताओं में भारतीय वर्ण—व्यवस्था, जाति, नस्लवाद आदि के साथ साथ बलात्कार, व्याभिचार, अत्याचार और जार कर्म का चिट्ठा खुला हुआ है। कैलाष दहिया लिखते है, '' दलित कविता नफरत और घृणा के खिलाफ लिखा गया पाठ है। इसलिए स्वाभाविक है कि इसके स्वर तलब ही नहीं बल्कि बेहद आक्रोष भरे और कठोर होंगे। इसमें सबसे बड़ी खासियत यह भी है कि इसकी रचना केवल और केवल दलित ही कर सकता है कोई और नहीं।''२

'बयान' पत्रिका का दलितोन्मुखी कविता विषेशांक अक्तूबर २००९ में प्रकाषित हुआ। इस अंक में दलित जीवन से संबंधित कविताएँ है। इसको ही आधार बनाकर प्रस्तुत शोधलेख लिखा गया है।

दलितों को रहने के लिए पक्का मकान नहीं होता। वह टूटे फूटे झोपड़ी में अपना जीवन गुजारते है। परिंदो को उडने के लिए खुला आकाष होता है, घर होता है। परंतु दलितों के पास कुछ नहीं होता। बलवीर माधोपुरी 'मेरा बुजुर्ग' इस कविता में लिखते है —''परिंदों को उड़ने को आकाष
रहने को घर है, और मेरे पास क्या है?
गौरवमयी संस्कृति का देश ।
गुलामी की प्रथा को बरकरार रखने के लिए
मेरी अपनी सन्तान ।''३ दलितों की सन्तान इस गुलामी की प्रथा को आगे बढ़ाने के लिए ही जन्म लेती है। इस व्यवस्था को मिटाने की कोषिश कितनी भी हो लेकिन यह व्यवस्था बदलती ही नहीं है।

दलित को मंदिर प्रवेश निशेध है। कभी कभार दलित ने मंदिर में प्रवेश